**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना मधुबनी**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **श्रृंगार रस कें रसराज किएक कहल जाइत अछि ?**

 **संस्कृतक अधिकांश आचार्य लोकनि श्रृंगार रस कें ‘ रसराज ‘ क नाम सँ अभिहित कए एकरा सर्वप्रमुख स्थान प्रदान कएने छथि | नवो रसमे श्रृंगार कें प्रमुखतम मानैत ध्वनिकारक कथन छनि –**

 **‘ श्रृंगार रसोहि संसारिणांनियमेन अनुभवविषयत्वात |**

 **सर्व रसे य: कमनीयतया प्रधान भुत: || “**

 **भरतमुनिक अनुसार संसार मे जे किछु पवित्र , विशुद्ध , उज्ज्वल आ दर्शनीय अछि , ओकर रस सँ उपमा देल जा सकैत अछि – “ यत्किंचिल्लोके शुंचि मेध्यं दर्मंनीयं वा तच्छुन्गारेणोपमीयते | “**

 **आचार्य रुद्रट सेहो कहैत छथि जे श्रृंगार रस सदृश रमणीयता अन्य रस सँ उत्पन्न नहि भए सकैत अछि | एहि रसमे आवाल वृद्ध सभ मानव ओतप्रोत अछि | एकर बिना काव्य न्यून आ हीन कोटिक होइत अछि |**

 **आनंदवर्धन श्रृंगार रस कें सर्वाधिक मधुर आ आनंददायक रस मानैत छथि : -**

 **“ श्रृंगार एव मधुर: पर: प्रह्लाद्नो रस: |**

 **तन्मयं काव्यमाश्रित्य माधुर्यं प्रतितिष्ठन्ति || “**

**एकर अतिरिक्त ओ श्रृंगार रसकें विशेष सुकुमार रस सेहो मानैत छथि | एतवय नहि किछु काव्य शास्त्री लोकनि श्रृंगार कें अन्य रस सभक आधार मानलनि अछि | आचार्य भोजराज त श्रृंगार , वीर , अद्भुत आदि दस रसक स्थान पर रसक संज्ञा मात्र श्रृंगार टा कें देलनि अछि |**

 **सरस्वती कंठाभरण मे श्रृंगार कें अहंकार आ अभिमानक पर्याय मानल गेल अछि | अहंकार मिथ्याभिमान नहि भए कें आत्मानुराग अछि | जखन कोनो सुंदर रमणी स्निग्ध दृष्टि सँ देखैत अछि त मोनमे आत्मविश्वास तथा आत्मानुराग उत्पन्न भए कें ओ आत्म विभोर भए उठैत अछि , इएह अहंकारक स्थिति अछि | एहन मानव अपना कें कृत - कृत्य आ धन्य मानैत अछि | एहि अहंकारक नाम श्रृंगार अछि , किएक त इएह भाव सहृदय कें सुखक चोटी पर आसीन कए दैत अछि –**

 **“ येन श्रृंगारीयते ( गम्यते ) स श्रृंगार: | “ आचार्य भोज एहि अहंकार आ अभिमान कें श्रृंगार रसक संज्ञा दैत छथि |**

 **एहि प्रकारें देखैत छी जे भोज , अग्निपुराणकार आदि आचार्य लोकनि श्रृंगार रस कें ‘ रसराज ‘ क संग – संग सर्वश्रेष्ठ रस आ सभ रसक आधार सेहो मानैत छथि | परवर्त्ती आचार्य मे सँ हेमचन्द्र , विद्याधर , रामचंद्र, गुणचन्द्र आदि लोकनि सेहो एहि रस कें सर्वप्रथम स्थान पर आसीन कए दैत छथि | एकर कारण ई अछि जे एकर सम्बन्ध ने त मात्र मानव जाति धरि सीमित अछि बल्कि ई सकल जाति सामान्य क अत्यंत परिचित एवं सकल मनोहारी अछि “ तत्र कामस्य सकल ---- | जाति सुलभतयात्यंत पतिचितत्वेन सर्वान्प्रति हृद्यतेति पूर्व श्रृंगार: | “**

 **आचार्य विश्वनाथ सेहो श्रृंगार रस कें व्यापक तथा महत्वपूर्ण रस स्वीकार कएलनि अछि | हुनका अनुसार मात्र श्रृंगार रस सैह टा एक एहन रस अछि जाहिमे उग्रता , मरण , आलस्य आ जुगुप्सा कें छोड़ि कए अन्य निर्वेदादि एकर संचारी भाव होइत अछि |**

 **( क्रमशः )**